

हमें हमारी रातें वापस कर दो

डॉ. महेश परिमल

प्रकाश प्रदूषण, भला यह भी कोई बात हुई। अब तक तो हमने ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण आदि सुना था, अब यह प्रकाश प्रदूषण क्या बला है?

आज जिस तेज़ी से हमारे बीच प्रकाश प्रदूषण फैल रहा है, वह किसी से छिपा नहीं है। पर हमारा ध्यान इस दिशा में कभी गया ही नहीं। जिस तरह से पृथ्वी पर जंतुओं और वनस्पति के लिए प्रकाश का महत्त्व है, उतना ही महत्त्व अंधेरे का भी है। पर अंधेरा है कहां? सोडियम, मर्करी आदि जैसी तेज़ लाइटों के कारण आज वन्य जीवों का जीना दूभर हो गया है। आखिर कई काम ऐसे होते हैं, जो अंधेरे में ही संभव हैं। पर ऐसा होता नहीं है। इस प्रकाश प्रदूषण से आज पशु-पक्षी बुरी तरह से हलाकान हैं। वे चीख-चीखकर कह रहे हैं, हमें हमारा अंधेरा वापस दिला दो, हम जीना चाहते हैं। हमें हमारी रातें वापस कर दो, नहीं चाहिए हमें ये आंखें चौंधियाने वाली रोशनी। हम अंधेरे में ही भले।

पिछले साल जुलाई में कनाडा के एडमंटन में सोसायटी फॉर कंज़र्वेशन बायोलॉजी की एक बैठक प्रकाश प्रदूषण को लेकर हुई थी। इस बैठक में कई देशों के प्रतिनिधि शामिल थे। सभी ने एक राय से यह कहा कि अब समय आ गया है कि वन्य जीवों को उनकी रातें लौटाई जाएं। आजकल हो यह रहा है कि अमावस्या की काली रातें भी प्रकाशमय होने लगी हैं। शहर, राजमार्ग, पर्यटन स्थल, चौराहे आदि अब जगमगाने लगे हैं। जंगलों से होकर गुज़रने वाली सड़कें भी भले सुनसान रहे, पर रोशनी से जगमगती अवश्य हैं। इस दौरान इन हिस्सों में रहने वाले जीव-जंतु, वनस्पति आदि का जीवनचक्र प्रभावित होने लगा है। अब तो कस्बों में भी तारों भरी अंधेरी रात देखने को नहीं मिलती।

हम तेज़ रोशनी के इतने अधिक आदी हो चुके हैं कि अंधेरी रातें हमें काटने को दौड़ती हैं। ऐसे में अमरीका के ऊटा के 'ओवाकोम ब्रिज' को 'डार्क स्काय पार्क' नाम दिया गया है। यह नाम इंटरनेशनल डार्क स्काय एसोसिएशन ने



ओवाकोम ब्रिज

दिया है। डार्क स्काय पार्क यानी अंधेरे आकाश का बगीचा। वहां अभी भी तारों भरी अंधेरी रात देखने को मिलती है। निशाचर प्राणियों के लिए यह एक वरदान है कि उनके हिस्से अंधेरी रातें हैं।

इंसान अपना अधिकांश काम दिन में करते हैं, इसलिए उन्हें रोशनी पसंद है। पर वनस्पतियों और निशाचरों के लिए अंधेरे का काफी महत्त्व है। रात में उजाला होने से कई लाभ हो सकते हैं, पर हानियां भी कई हैं। इसे ही कहते हैं प्रकाश प्रदूषण। इससे इंसान तो ठीक, पर निशाचर अपनी कई क्रियाएं, जैसे प्रजनन, प्रवास, बच्चों को खिलाना जैसे काम नहीं कर पा रहे हैं। तेज़ रोशनी हमारे भीतर इस तरह से बस गई है कि ये रोशनी दूसरे अन्य प्राणियों के लिए कितना विध्वंसक असर कर रही है, इसका अंदाज़ा शायद हमें नहीं है। संसार में कई जीव ऐसे हैं, जो अपने कई काम अंधेरे में ही करते हैं। आपको मालूम होगा कि कछुए की तरह चलने वाला एक दरियाई प्राणी है। उसके अंडों से निकलने वाले नवजात बच्चे चांदनी में समुद्र तट पर जाने की बजाय तेज़ रोशनी वाले रिसोर्ट की तरफ आकर्षित होने लगे हैं। यही हाल पक्षियों का है, वे भी इस रोशनी से आकर्षित होते हैं, लेकिन बिजली के तारों में उलझकर अपने प्राण गंवाते हैं।

जंगलों का लगातार होता नाश, बढ़ता शहरीकरण,

दूर-दूर आबादी ही आबादी, ऐसे में निशाचर प्राणियों की वंशवृद्धि, व्यवहार कैसे संयमित हो जाएगा? प्रकाश प्रदूषण ने उनके जीवन में खलल पैदा कर दिया है।

कनाडा में हुई उक्त बैठक में यह तय किया गया कि अब जब भी रोशनी स्थापित करने की बात हो, तो वन्य जीवों की तरफ भी ध्यान दिया जाए, ताकि उनका जीवन सुचारु रूप से चलता रहे। इस बैठक की अध्यक्षता करने वाले ट्रेविस बॉगकोर ने आवेशपूर्ण शब्दों में कहा कि तेज़ रोशनी के कारण कई पक्षी अपना रास्ता बदलने लगे हैं। सोडियम लैम्प की पीली रोशनी में कई चमगादड़ अपना रास्ता भटक गए; इनमें से अधिकांश गर्भवती मादाएं थीं। बॉगकोर इंग्लैंड यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ कैलिफोर्निया में प्रोफेसर हैं।

कई प्रजातियों के पक्षी रात में भी प्रवास करते हैं। जगमगाते टॉवरों, इमारतों के कारण वे भ्रमित हो जाते हैं। वे उन जगमगाते टॉवरों, इमारतों के चारों ओर चक्कर लगाने लगते हैं और कई बार इनसे टकराकर अपने प्राण गवां देते हैं। अमरीका के फ्लोरिडा स्थित एक टीवी टॉवर के पिछले 25 वर्षों के सर्वेक्षण में यह बात सामने आई कि वहां 189 प्रजातियों के 42 हजार से अधिक पक्षी मौत के घाट उतर गए।

अमरीका की न्यूयॉर्क सिटी की बोर्धान यूनिवर्सिटी में किए गए शोध से यह बात सामने आई है कि अधिकांश पक्षी अपना रास्ता अधिक शांत और गहरी काली रात में ही तय

करते हैं। लेकिन जगमगाती रोशनी के कारण ये भटकने लगे हैं। तब ये विचित्र आवाज़ें करने लगते हैं, जिसका आशय यही होता है कि ये तेज़ रोशनी के कारण भटक गए हैं। शोध में यह बात भी सामने आई है कि एलईडी लाइट को छोड़कर शेष सभी लाइटें वन्य प्राणियों के लिए हानिकारक होती हैं।

समुद्र किनारे आने वाले पक्षियों की स्थिति पर अध्ययन होने लगे हैं। कई रोशनी कुछ प्राणियों के लिए लाभदायक होती हैं, तो कुछ के लिए हानिकारक। इसलिए यदि रात की रोशनी को कुछ हल्का कर दिया जाए, तो निशाचरों के लिए आसानी होगी।

यह तो तय है कि तेज़ रोशनी इंसानों को भी विचलित कर देती है। फिर पशु-पक्षियों की क्या बिसात? लेकिन इसके बिना आज मानव जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। इंसानों के लिए आजकल रात-दिन समान होने लगे हैं। कई लोग रात ड्यूटी ही पसंद करते हैं। बरसों से उन्हें दिन ड्यूटी मिली ही नहीं, ऐसे में उनका जीवन चक्र गड़बड़ा जाता है। यही हाल पशु-पक्षियों का है, वन्य प्राणियों की हालत तो और भी खराब है। जंगल रहे नहीं, आबादी का दबाव चारों ओर बढ़ रहा है। ऐसे में कहां जाएं? अभयारण्यों में भी रोशनी का साम्राज्य है। इसलिए अब चारों तरफ से यही आवाज़ें आने लगीं हैं कि हमें हमारी रातें वापस कर दो, हमें अंधेरा चाहिए, हम जीना चाहते हैं, हमें इस तेज़ रोशनी से मुक्ति दो! (स्रोत फीचर्स)